गुरमति संगीत में गुरू साहिबान का योगदान

Dr. Harjas Kaur
Associate Professor, Govt. College, Ropar

सिख धर्म के इष्टगुरू 'गुरूग्रंथ साहिब' है। इस ग्रन्थ में अलग–अलग गुरू साहिबान के अलावा मध्यकालीन धार्मिक परम्पराओं से सम्बन्धित या संत–भक्तों की वाणी दर्ज है। गुरू साहिबान के अलावा ये संत–भक्त कवि भी अपनी वाणी के कीर्क्तन के लिए संगीत का इस्तेमाल करते थे पर इनके यत्न इकले–दुकले और व्यक्तिगत थे। इसलिए इसके संगीत–प्रयोग में किसी संगीत–परम्परा के सिद्धांत या विधान को खोजना कठिन प्रतीत होता है पर 'श्री गुरू ग्रन्थ साहिब' का सांगीतिक संकलन और इससे प्रकट होने वाला संगीत–प्रबंध एक महान् संगीत–परम्परा का आधार अपने में लिए बैठा है, जिसको 'गुरमति संगीत' कहा जाता है। गुरमति संगीत परम्परा इन गुरू साहिबान और संत–भक्तों के योगदान द्वारा ही विकसित और सम्पूर्ण होती है। इसलिए इस परम्परा में इनका योगदान गुरमति संगीत के सम्बन्ध में हमारी समझ को और भी मज़बूत करेगा।

गुरमति संगीत में गुरू साहिबान का योगदान

श्री गुरू नानक देव जी – सिख धर्म के प्रथम गुरू श्री गुरू नानक देव जी का जन्म 1469 ई॰ में पिता महिता कालू और माता त्रिपता के घर तलवण्डी, पाकिस्तान में हुआ, जिसको आजकल 'ननकाणा साहिब' कहा जाता है। श्री गुरू नानक देव जी ने धर्म के प्रचार और विकास के लिए शब्द और संगीत को संयुक्त और सम्मिलित रूप में प्रयुक्त किया है। श्री गुरू नानक देव जी ने वाणी की प्रस्तुति के लिए भाई मरदाने को अपना संगी बनाया। भाई मरदाना गुरमति संगीत–परम्परा के प्रमुख आचार्य रहे हैं। भाई मरदान जहाँ उच्चकोटि के रबाब वादक थे, वहाँ ख़ानदानी गायक भी थे। श्री गुरू नानक देव जी जब शब्द का गायन करते तो भाई मरदाना रबाब द्वारा उनकी संगति करते। श्री गुरू नानक देव जी ने गाँव भैरोआणा कपूरथला के भाई फिरन्दा, जो भाई 'फेरू' के नाम से भी प्रसिद्ध थे, को आदेश देकर गुरमति संगीत के प्रचार के लिए रबाब तैयार कराया। श्री गुरू नानक देव जी का भाई मरदाने को एक साथी चुनना और भाई मरदाने के लिए एक विशेष प्रकार का रबाब तैयार कराना इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि श्री गुरू नानक देव जी ने शब्द और संगीत द्वारा इस लोकाई को शोधने की प्रकिया आरम्भ की। जनम साखियों में दर्ज़ श्री गुरू नानक देव जी की सिरजन–प्रकिया और संगीत के गहरे सम्बन्ध के अनेक प्रमाणों से स्पष्ट है कि श्री गुरू नानक देव जी की वाणी के अवतरण के समय संगीत एक माध्यम के रूप में स्वयं ध्वनित होता है। श्री गुरू नानक देव जी कहते थे–'मरदानियाँ, रबाब छेड़ वाणी आई है' तो भाई मरदाना रबाब छेड़ते और गुरू नानक साहिब धुर की वाणी का गायन करते। यहाँ शब्द और संगीत अलग–अलग नहीं दिखाई देते, बल्कि इस वाणी–रूप शब्द और संगीत की संयुक्त प्रस्तुति से प्रभु–कीर्तन जैसे मूर्तिमान हो रहा है।

श्री गुरू नानक देव जी ने जैसे भारतीय धर्मदर्शन के क्षेत्र में एक नवीन पथ की सर्जना की, उसी तरह उन्होंने अपने धर्म के प्रचार और विकास के लिए नवीन संचार युक्तियों का इस्तेमाल भी किया। आपने वाणी की प्रस्तुति के लिए सुनिश्चित विधिपूर्वक प्रबंध की सर्जना की। इस विधान को 'गुरमति संगीत प्रबंन्ध' कहा

जाता है। उनके द्वारा सृजित संचार का यह विलक्षण प्रबन्ध वैज्ञानिक विशिष्टताओं सहित उजागर होता हुआ विलक्षण रूप में विकसित हुआ। इस संचार–प्रबन्ध की केन्द्रीय और मूल जुगत संगीत पर ही आधरित थी। इसके अधीन भारतीय संगीत के नवीन तत्वों को, मौलिक प्रयोग का धरणी बनाकर, नवीन अर्थ दिए गए हैं। इस संगीत–प्रबन्ध के अधीन प्रयोग में आनेवाले विभिन्न सांगीतिक तत्व राग, रहाओ, अंक, धरू आदि गायक का मार्ग–दर्शन करते हैं। 'श्री गुरूग्रन्थ साहिब' के ऊपर संगीत तत्वों का उल्लेख प्रस्तुतिकार के लिए शब्द को निर्धारित प्रबन्ध के अनुसार गायन करने का आदेश है।

श्री गुरू नानक देव जी ने संगत–स्रोत श्रेणी के लिए मानसिकता को मुख्य रखकर संचार के निमिक्त भिन्न–भिन्न रागों का प्रयोग किया, जो इस प्रकार है–

मुख्य रागः श्री, माझ, गऊड़ी, आसा, गूजरी, देवगंधरी, बिहागड़ा, वडहंस, सोरठि, धनाश्री, तिलंग, सूही, बिलावल, रामकली, मारू, तुखारी, भैरऊ, बसन्त, सारंग, मल्हार, प्रभाती।

मिश्रित रागः गऊड़ी गुआरेरी, गऊड़ी चेती, गऊड़ी बैरागणि, गऊड़ी दीपकी, गऊड़ी पूरबी दीपकी, गऊड़ी पूरबी, आसा काफ़ी, सूही काफ़ी, मारू काफ़ी, वसन्त हिण्डोल, प्रभाती बिभास।

दक्षिणी रागः गऊड़ी दक्षिणी, वडहंस दक्षिणी, बिलावल दक्षिणी, रामकली दक्षिणी, मारू दक्षिणी, प्रभाती दक्षिणी।

उपरोक्त रागों से ही पता लग जाता है कि श्री गुरू नानक देव जी ने प्रचिलत रागों के अलावा अप्रचलित रागों को भी वाणी के गायनार्थ प्रयोग किया, जिस से श्री गुरू नानक देव जी की संगीत–सम्बन्धी सूक्ष्म सूझ का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। श्री गुरू नानक देव जी ने उक्त रागों के अधीन अष्टपदी, पद, छंद, वार गायन–शैलियों का प्रयोग किया।

श्री गुरू नानक देव जी ने संगीत के विकास के लिए करतारपुर साहिब, जो आज पाकिस्तान में है, को कीर्तन–केन्द्र बनाया। इसकी महिमा के सम्बन्ध में 'श्री गुरूग्रन्थ साहिब' में फ़रमान हैः–

– 'करतारपुरि करता वसै सन्तन कै पासि'[1]

करतारपुर स्थान पर सुबह–शाम गुरवाणी कीर्तन किया जाता था जिसके बारे में भाई गुरदास जी ने भी कहा हैः– सोदरू आरती गावीयै अंमृत वेले जापु उचारा।[2]

श्री गुरू अंगददेव जी– श्री गुरू नानक देव जी की दूसरी गद्दी ज्योति श्री गुरू अंगद देव जी भाई लहिणा, का जन्म 31 मार्च, 1504 ई॰ को गाँव मते की सरां में हुआ। आप बचपन से ही ध्र्म–कर्म में विश्वास रखते थे और देवी के भक्त थे। श्री गुरू नानक देव जी के दर्शन–उपरांत आप गुरूजी के शिष्य बन गए। आपकी सेवा और भक्ति–भावना से खुश होकर श्री गुरू नानक देव जी भाई लहिणा को 'अंगद' कहा करते थे। इससे ही आपका नाम 'गुरू अंगद' प्रसिद्ध हुआ। 1538 ई॰ में आपने सिक्खों के दूसरे गुरू के रूप में गद्दी सम्भाली। श्री गुरू अंगद देव जी ने श्री गुरू नानक देव जी द्वारा चलाई कीर्तन परम्परा का अनुकरण ही नहीं किया बल्कि खुद ने भी वाणी की रचना की। आपकी वाणी श्लोकों के रूप में श्री, माझ, आसा, सोरठि, सूही, रामकली, मारू, सारंग, मल्हार रागों में 'श्री गुरू ग्रन्थ साहिब' में अंकित है।

आपने श्री गुरू नानक देव जी द्वारा चलाई कीर्तन परम्परा को पूर्ण निष्ठा और लगन रूप में प्रचारार्थ दूसरा कीर्तन केन्द्र खडूर साहिब में स्थापित किया। जिस के बारे में 'श्री गुरू ग्रन्थ साहिब' में दर्ज़ भाई सक्ता और बलवंड का फ़रमान हैः–

– फेरि वसाया फेरू आणि सतिगुरि खाडूरू।[3]

इसकी साख भाई गुरदास जी ने भी भरी हैः–

– गुर नानक हंदी मोहर हथ गुर अंगद दी दोही फिराई।

दिता छोड करतारपुर बैठ खडूरे जोति जगाई।।[4]

श्री गुरू अंगद देव जी के दरबार में भाई मरदाने का पुत्रा भाई सज़ादा जिसको रबाब की शिक्षा अपने पिता से प्राप्त हुई, के अलावा भाई सादू, भाई बादू, भाई रज़ादा, भाई सक्ता और बलवंड सुबह–शाम गुरवाणी कीर्तन की परम्परा को क़ायम रख रहे थे।

श्री गुरू अमरदास जी – सिक्खों के तीसरे गुरू श्री गुरू अमरदास जी का जन्म 4 मई 1479 ई॰ को बासरके नामक गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम तेजभान था। आप ने अपना आरम्भिक जीवन सच्चे गुरू की खोज करने में ही बिताया। गुरू अंगद देव जी की सुपुत्री बीबी अमरो से गुरू नानक देव जी की वाणी सुनकर वह इतने प्रभावित हुए कि श्री गुरू अंगद देव जी के दर्शन करने के लिए खडूर साहिब गए और गुरू जी के शिष्य बन गए। श्री गुरू अमरदास जी ने अपनी वृद्धावस्था में वाणी की रचना की जो आपका 'गुरमति संगीत' के प्रति उल्लेखनीय योगदान है। आपकी वाणी 'श्री गुरू ग्रन्थ साहिब' में श्री, माझ, गऊड़ी गुआरेरी, गऊड़ी बैरागणि, गऊड़ी पूर्वी, आसा, आसा काफ़ी, गूजरी, वडहंस, सोरठि, धनाश्री, सूही बिलावल, रामकली, मारू, भैरव, बसंत, बसंत हिडोल, सारंग, मल्हार, प्रभावी, विभास रागों में अंकित है। श्री गुरू अमरदास जी ने श्रंगार रस की वाणी के लिए सूही राग का प्रयोग किया। मौसमों के चित्राण के लिए बसंत और मल्हार जैसे रागों का इस्तेमाल किया। जिससे स्पष्ट है कि आप गुरवाणी की रचना और संगीत के सुमेल की सूक्ष्म सूझ रखते थे। श्री गुरू अमरदास जी ने उपरोक्त रागों के अधीन पद, अष्टपदी, छंद, सोलहे वार, गायन शैलियों के अन्तर्गत वाणी का गायन किया। रामकली राग में 'अनंद साहिब' की महान् रचना है जो सिक्ख धर्म में नितनेम की वाणियों में से एक है और प्रत्येक समागम के अन्त में इसके गायन करने की प्रथा है।

श्री गुरू अमरदास जी ने 'गुरमति संगीत' के प्रचार के लिए 'मंजी प्रथा' चलाई। मंजी से गुरू नानक देव जी के भाव तथा संगीतमय उपदेशों का प्रचार करने के लिए किसी उच्च जीवन वाले सेवक की नियुक्ति करनी थी। इस तरह श्री गुरू अमरदास जी ने गुरमति और संगीत के 22 विद्वानों द्वारा पंजाब के अलग–अलग स्थानों में 22 मंजियाँ स्थापित की। श्री गुरू अमरदास जी ने गुरवाणी कीर्तन का तीसरा केंद्र 'गोंइदवाल साहिब' में बसाया।

फेर बसाया गोंइदवाल अचरज खेल न लखिया जाई।5

श्री गोंइदवाल साहिब की महिमा को 'श्री गुरूग्रन्थ साहिब' में इस तरह बताया गया हैः

गेबिंद वालु गोबिंद पुरी सम जलहन तीरि बिपास बनायऊ।

गयऊ दुखु दूरि वरखन को सु गुरू मुखु देखि गुरू सुखु पायऊ।।[6]

श्री गुरू अमरदास जी के दरबार में भाई सक्ता और बलवंड के अलावा ढला स्थान के निवासी भाई पांध और बूला रबाबी गुरवाणी का कीर्तन करते थे। 'कानूने मौसीक़ी' पुस्तक के रचयिता ने पृष्ठ 306 पर इसका उल्लेख किया है कि तीसरी पातिशाही श्री गुरू अमरदास जी ने 'सारंदा' साज का निर्माण किया।[7]

श्री गुरू रामदास जी – गुरू नानक गद्दी के चौथे वारिस श्री गुरू रामदास जी का जन्म 1534 ई॰ को चूना मंडी लाहौर में श्री हरिदास जी के घर हुआ। आपका बचपन का नाम जेठा था। एक बार आप सिक्ख साथियों के साथ श्री गुरू अमरदास जी के दर्शन करने के लिए गोंइवाल साहिब गए तो गुरू सेवा के लिए आप वहीं रह गए। आपके गुरू–घर से अत्यन्त प्यार और श्रद्धा से प्रभावित होकर गुरू अमरदास जी ने अपनी सुपुत्री बीबी भानी जी के साथ आपका विवाह कर दिया। श्री गुरू रामदास जी ने सिक्ख गुरूओं द्वारा चलाई गुरवाणी कीर्तन परंपरा को और विकसित किया। आप की वाणी श्री, माझ, गऊड़ी, गऊड़ी गुआरेरी बैरागणि, गऊड़ी पूर्वी, गऊड़ी माझ, आसा, आसा काफ़ी, आसावरी, गुजरी, देवगांधरी, बिहागड़ा, वडहंस, सोरठि, धनाश्री, जैतश्री, टोड़ी, बैराड़ी, तिलंग, सूही बिलावल, रामकली, नटनारायण, नट, गौड़मल्हार, मारू, दरबारी, केदार, भैरऊ, बसंत, सारंग, मल्हार, कान्हड़ा, कलियान, कलियानभूपाली, प्रभावी, प्रभावी विभास रागों में 'श्री गुरूग्रंथ साहिब' में दर्ज है।

श्री गुरू रामदास जी की वाणी सनातनी और लोक काव्य रूपों की धरणी है, जो अपना–अपना गायन रूप रखते हैं। श्री गुरू रामदास जी ने वाणी की रचना के लिए जहाँ शास्त्रीय संगीत की शैलियों, पदों, अष्टपदियों का प्रयोग किया, वहाँ घोड़ीयाँ, छंद, वार, लोक काव्य, रूपों, लोक गायन, शैलियों का भी प्रयोग किया। श्री गुरू रामदास जी ने 'पड़ताल' नामक शास्त्रीय शैली, जो ताल पर आधारित है, को जन्म दिया। भारतीय संगीत में पड़ताल गायन शैली का प्रभाव दृष्टिगोचर नहीं होता। पड़ताल गायन शैली गायन के अनुसार शब्द की स्थायी की तुक में एक ही ताल का प्रयोग किया जाता है और अलग–अलग अन्तरों में अलग–अलग तालों के प्रयोग होने के बावजूद राग एक ही रहता है। पड़ताल शैली 'गुरमति संगीत' के लिए ही नही, बल्कि भारतीय संगीत में भी महानता और विलक्षणता की प्रतीक है। श्री गुरू रामदास जी की 7 रागों के अधीन 19 पड़ताल श्री गुरूग्रन्थ साहिब' में दर्ज हैं। लोक काव्य रूप छंद, श्री गुरू रामदास जी की वाणी में विशिष्ट उक्तमता का धरणी है, जिनका बाद में 'आसा की वार' में गायन किया जाने लगा। श्री गुरू रामदास जी ने गुरवाणी संगीत का व्यावहारिक रूप में प्रचार करने के लिए रामदास जी पुरा या चक गुरू की नीवँ रखी, जिसको बाद में 'अमृतसर' कहा जाने लगा। इस बारे में भाई गुरदास जी ने कहा हैः–

बैठा सोडी पातिसाहु रामदास सतिगुरू कहावै।
पूरन ताल खटाया अमृतसर विचि जोति जगावै।।[8]

यह महान् कीर्तन केंद्र 'श्री हरिमंदर साहिब' और 'दरबार साहिब' के नाम से भी प्रसिद्ध है। 'गुरमति संगीत' में चौकियों के अनुसार कीर्तन करने की परम्परा 'श्री हरिमंदर साहिब' में ही शुरू हुई थी। 'गुरमति संगीत' में चौकी चार सिक्खों के जत्थे को कहा जाता है। गुरवाणी कीर्तन में आसा की वार की चौकी, बिलावल की चौकी, सोदरू की चौकी, आरती की चौकी, ये चार चौकियां प्रचलित हैं। इन चौकियों के अंतगर्त

अलग–अलग समय से सम्बन्धित रागों में कीर्तन किया जाता था। 'श्री हरिमंदर साहिब' के अन्दर चौकियों के अनुसार गुरवाणी कीर्तन की निरन्तर ध्वनियाँ आज भी उसी तरह ही चल रही हैं। श्री गुरू रामदास जी के दरबार में भाई सक्ता और बलवंड प्रसिद्ध रबाबी कीर्तनकार सुबह–शाम कीर्तन करते थे।

श्री गुरू अर्जुन देव जी – सिक्ख लहर के पाँचवें गुरू श्री गुरू अर्जुन देव जी का जन्म 15 अप्रैल 1563 ई॰ को गोंइदवाल में हुआ। आप सिखों के चौथे गुरू श्री गुरू रामदास जी के पुत्र थे। घर में सिक्खी माहौल होने के कारण आपका पालन–पोषण पूर्ण सिक्ख मर्यादा के अनुसार हुआ। श्री गुरू अर्जुन देव जी बचपन से ही असाधारण प्रतिभा के मालिक और गम्भीर विचारों के धरणी थे। श्री गुरू अर्जुन देव जी ने श्री, माझ, गऊड़ी गुआरेरी, गऊड़ी, गऊड़ी चेती, गऊड़ी बैरागणि, गऊड़ी पूर्वी, गऊड़ी माझ, गऊड़ी मालवा, गऊड़ी माला, आसा, आसा काफ़ी, आसावरी, गूजरी, देवगंधरी, देवगांधर, बिहागड़ा, सोरठि, वडहंस, धनाश्री, जैतश्री, टोड़ी, बैराड़ी, तिलंग, सूही, बिलावल, गौड, रामकली, नटनारायण, नट, मालीगऊड़ा, मारू, दरबारी, तुरवारी केदार, भैरव, बसंत, सारंग, मल्हार, कान्हड़ा, कलयान, प्रभाती, प्रभतवी विभास, रागों में वाणी का उच्चारण किया जो 'श्री गुरूग्रन्थ साहिब' में दर्ज हैं। श्री गुरू अर्जुन देव जी ने सभी गुरू साहिबान से ज़्यादा वाणी की रचना की। वाणी के गायन के लिए सबसे ज़्यादा राग और गायन शैलियों का प्रयोग किया। आपने वाणी के लिए छंद, वार, सोलहे, अंजुलियाँ लोक काव्य रूपों के अलावा पद, अष्टपदी जैसे सनातनी रूपों का भी प्रयोग किया। आपने पड़ताल गायन शैली का भी खूब प्रचार किया। आपकी 36 पडतालें 'श्री गुरूग्रन्थ साहिब' में दर्ज हैं।

वर्तमान समय के 'श्री गुरूग्रन्थ साहिब' का सम्पादन श्री गुरू अर्जुन देव जी की महान् देन है। 'श्री गुरूग्रन्थ साहिब' के सम्पादन का आधार रागात्मक है, जो विश्व के धार्मिक ग्रन्थों में विलक्षणतोका का धरणी है। श्री गुरू अर्जुन देव जी ने गुरवाणी संगीत के संस्थागत प्रचलन के लिए 'तरनतारन साहिब' की स्थापना की और 'श्री हरिमंदर साहिब' अमृतसर को पूरा कराया। 'आसा की वार' का सम्पूर्ण गायन श्री गुरू अर्जुन देव जी के समय ही शुरू हुआ। श्री गुरू अर्जुन देव जी के दरबार में भाई सक्ता और बलवंड के अलावा भाई किदार, झांझू और मुकंद जैसे प्रसिद्ध रबाबियों के गुरवाणी संगीत द्वारा शास्त्रीय संगीत का खूब प्रचार किया। श्री गुरू अर्जुन देव जी के समय ही किसी कारण भाई सक्ता और बलवंड गुरू साहिब से नाराज़ हो गए। इससे श्री गुरू अर्जुन देव जी ने साधारण सिक्ख संगत को कीर्तन करने का आदेश दिया। श्री गुरू अर्जुन देव जी ने स्वयं भी कीर्तन करने में उत्साह दिखाया। जिससे साधारण सिक्ख संगत का कीर्तन की तरफ रूझान हुआ इससे अशिक्षित साधारण सिक्ख संगत ने लोक संगीत के तौर पर गुरवाणी का गायन शुरू किया।

इस तरह श्री गुरू अर्जुन देव जी ने समय गुरवाणी कीर्तन में क्रियात्मक तौर पर रागी, रबाबी, क़सबी लोग यानी शिक्षित लोग और अशिक्षित साधारण सिक्ख संगत का दो वर्गो में प्रवेश हुआ। गुरवाणी कीर्तन की शास्त्रीय व लोक संगीत, दोनों परम्पराएँ उस समय से लेकर अब तक उसी तरह चली आ रही हैं। श्री गुरू अर्जुन देव जी के समय गुरूवाणी के कीर्तन के लिए सारन्दा व तबला जोड़ी साजों का प्रयोग किया जाने

लगा। इससे पहले रबाब, मध्यम वीणा सितार और तम्बूरे का प्रयोग ज़्यादा होता था।[9] श्री गुरू अर्जुन देव जी सारंदा में विशेष महारत रखते थे।

श्री गुरू हरिगोविंद जी – श्री गुरू नानक देव जी कह छठी ज्योति श्री गुरू हरिगोविन्द देव जी, गुरू अर्जुन देव जी के सुपुत्र थे। आपने जुल्म का विरोध करने के लिए सिक्ख–धर्म में वीरता का प्रवेश कराया। श्री गुरू हरिगोविंद जी ने चली आ रही सिक्ख कीर्तन परम्परा को उसी तरह क़ायम रखा।[10] आपके बारे में कहा जाता है कि आपने श्री गुरू ग्रंथ साहिब में अंकित नौ वारों पर धुनों के शीर्षक लिखे।[11] 'श्री गुरू ग्रंथ साहिब' में अंकित धुनों के शीर्षकों के अनुसार वाराँ का गायन श्री गुरू हरिगोविंद साहिब के समय किया जाता था। गुरू हरिगोविंद साहिब ने गुरवाणी कीर्तन के प्रचार और प्रसार के लिए 'कीरतपुर साहिब' की स्थापना की, जहाँ सुबह–शाम परम्परा के अनुसार कीर्तन किया जाता था।

श्री गुरू हरिगोविंद साहिब के समय गुरवाणी कीर्तन के साथ ढाड़ी परम्परा गुरू–दरबार में आई। भाई नत्था और अब्दुल्ला गुरू हरिगोविंद साहिब के दरबार के प्रसिद्ध ढाड़ी और रबाबी थे। इन्होंने सिक्ख सेना में जोश पैदा करने के लिएए वीररस प्रदान करने के लिए योद्धियाँ की वाराँ कर गायन करके गुरूघर की ख़शी प्राप्त की। भाई बाबक गुरू हरिगोविंद साहिब के दरबार में रबाबी के साथ–साथ महान् योद्धा भी थे, जिन्होंने अमृतसर की जंग में बहुत वीरता दिखाई। श्री गुरू हरिगोविंद साहिब के समय ही वाराँ के गायन के लिए, वीररस प्रदान करने के लिए सारंगी साज गुरू–दरबार मे प्रवेश हुआ। आपको पाऊस ताज का निर्माता माना जाता है।[12]

श्री गुरू हरिराय जी – श्री गुरू हरकिशन जीः श्री गुरू हरिराय जी और श्री गुरू हरकिशन जी परिस्थिति अनुकूल न होने के कारण वाणी की रचना नहीं कर सके, पर इन्होंने श्री गुरू नानक देव जी द्वारा चलाई गई कीर्तन की रहु रीति को बहुत प्यार और सत्कार से क़ायम रखा।

श्री गुरू तेग़ बहादुर जी – श्री गुरू तेग़ बहादुर जी श्री गुरू हरिगोविंद जी के सुपुत्र थे। आप सिक्खें के नौवें गुरू बनकर गुरूगद्दी पर विराजमान हुए। गुरू तेग़ बहादुर ने गुरमति और संगीत की प्रथा को, जो लीहाँ पहले गुरूओं ने पाई, उसको और भी मजबूत किया। आपने गऊड़ी, आसा, देवगंधर, बिहागड़ा, सोरठि, धनासरी, जैतसरी, तिलंग, तिलंग काफ़ी, बिलावल, रामकली, मारू, बसंत, बसंन हिडोल, सारंग और जयजयवन्ती रागों में वाणी का उच्चारण किया। 'श्री गुरू गरूग्रंथ साहिब' में राग जयजयवती में केवल श्री गुरू तेग़ बहादुर जी की रचना उपलब्ध है। श्री गुरू तेग़ बहादुर जी ने उपरोक्त विभिन्न रागों में पद, अष्टपदी आदि गायन–शैलियों का प्रयोग किया। आपने श्री आनंदपुर साहिब में रहकर गुरूवाणी का सन्देश संगीत के द्वारा दूर–दूर तक पहुँचाया। श्री गुरू तेग़ बहादुर जी ने आपने से पूर्व गुरू साहिबानों द्वारा चलाई कीर्तन परम्परा को क्रियात्मक तौर पर सुरक्षित ही नहीं रखा, बल्कि वयक्तिगत योगदान द्वारा विकसित भी किया।

श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी – लासानी प्रतिभा के मालिक गुरू गोबिन्द सिंह जी का जन्म 26 दिसम्बर, 1666 ई॰ को पटना में हुआ। इनके पिता श्री गुरू तेग़ बहादुर जी और माता का नाम गूजरी था। बचपन में आपका पालन–पोषण मामे क्रिपाल ने किया। आप के बचपन के खेलों में ही असाधारण, इन्क़लाबी चिन्ह

दिखाई देते थे। छह वर्ष पटना में रहने के बाद आप आनन्दपुर साहिब में आ गए। आनन्दपुर साहिब में ही आपकी हर तरह की शिक्षा का प्रबन्ध किया गया। 1675 ई॰ में आप सिखों के दसवें गुरू बन कर गुरू नानक गद्दी के वारिस बने। श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी की वाणी रचना का संग्रह 'दशम् ग्रन्थ' है। सिक्ख धर्म में आदि ग्रन्थ 'श्री गुरू ग्रन्थ साहिब' के बाद दूसरा विस्तरित ग्रन्थ 'दशम् ग्रन्थ' है, परन्तु श्री ग्रन्थ साहिब की प्रामाणिकता जितनी पुष्ट है, दशम् ग्रन्थ की प्रामाणिकता उतनी ही संदेहास्पद है। श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी संत, कवि और संगीतकार के साथ–साथ एक महान् योद्धा भी थे, जिन्होंने अनेक कठिनाईयों का सामना करते हुए सिक्ख क़ौम और संगीत को नई शक्ति प्रदान की। उनहोंने सिक्खों को सिंह शब्द से अलंकृत कर विलक्षण व्यक्तित्व का मालिक बनाया। 'श्री दशम् ग्रन्थ साहिब' के वर्तमान रूप में निम्नलिखित वाणी क्रमवार संगृहीत हैः– जाप साहिब, अकाल उस्तति, बचित्रा नाटक, चंडी चरित्रा, वार श्री भगऊती जी की, ग्यान प्रबोध, चौबीस अवतार, ब्रह्मा अवतार, रूद्रावतार, शब्द हजारे, सवैये, खालसा महिमा, शास्त्र नाममाला, चरित्रों पाखिआन, जफ़रनामा।

श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी की रचनाओं के अध्ययन से सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि आप संस्कृत, अरबी, फ़ारसी, ब्रज और पंजाबी आदि भाषाओं के महान् विद्वान् थे, साथ ही महान् धार्मिक अग्रगामी और संगीत नेता थे। आपने सांगीतिक शब्दों को अकाल पुरख की महिमा के लिए सुन्दर ढंग से प्रयोग किया है उदाहरण के तौर पर वाणी जापु साहिब की कुछ तुकें इस प्रकार हैं:–

नमो गीत गीते।। नमो तान ताने।।
नमो नरित निरतै।। नमो नाद नादे।।
नमो पान पाने।। नमो बाद बादे।।

'दशम् ग्रन्थ' की शेष रचनाएँ बचित्रा नाटक का ही अंग हैं। ये संगीत और साहित्य के पक्ष से 'गुरमति संगीत' में विशेष महानता के साथ–साथ भारतीय परंपरा में भी श्रेष्ठतम स्थान रखती हैं।

सरब लोह ग्रंन्थ – श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी की महान् रचना 'सरब लोह ग्रंन्थ' एक अद्वितीय रचना है। इसमें वाणी के गायन के लिए प्रयुक्त किए गए रागों का अनमोल ख़जाना है। 'श्री सरब लोह ग्रंन्थ' में प्रयोग किए गए राग और राग प्रकारों की सूची इस प्रकार है:

राग	पृ॰	राग	पृ॰	राग	पृ॰
सारंग	1	गऊरी	4	भैरऊ	18
रामकली	20	गूजरी	20	देवगंधरी	22
प्रभाती	25	धनासरी	27	बिलावल	28
सूही	30	तेलंग	31	श्री राग	31
माझ	32	गऊरी पूरबी	32	गऊरी बैरागनि	32
गऊरी चेत	32	आसा	36	आसा काफ़ी	36
अटासावरी	37	नट नारायण	38	काफ़ी नट	38
नट	38	माली गऊड़ा	39	कानड़ा	40
कल्याण	41	मारू	45	परज	46

केदारा	47	सोरठि	49	जैजावन्ती	53
तुखारी	58	बिहागड़ा	63	बिहागड़ा अडान	64
बिहागड़ा मालवा	69	जैतसरी	74	बैराड़ी	79
टोड़ी तलाना	83	गौझ	87	गौढबिलावल	92
राग सारंग	105	सारंग काफ़ी	132	सारंग पड़ताल	138
सारंग खड़पदी	164	हमीर	165	गंभीर	166
कुंभ	167	मलार मलारी	169	मलार भैरऊ	169
मलार संगीती	175	मलार सं॰ तलाणा	175	मलार पड़ताल	179
मलार त्रिभंगी	202	मलार चौखंडी	206	मलार सयाम	207
बसंत	240	बसंत हिडोल	248	बसंत मलारी	264
मलकौंस तयलंगी	282	मलकौंस तयलंगी	282	माल॰ मेघ मोला	292
मलकौंस दादरा	301	रागुदीपक करनाटकी	306	बिसनुपद दीपक	338
बि॰पद राग हरख	357	बिसनुपद दिसाख	360	बि॰पद मधु माधै	362
बसनुपद भैरवी	364	बि॰ पद बिलावली	367	बिसनुपद बंगालम	371
बंगुली	370	असलेखी	375	ललित	373
गांधरी	377	सीहुती	376	मसत अंग	379
गोंढकरी	378	मेवारा	382	प्रबल दंढ	380
कऊसक	385	कऊभारा	383	खऊखट	391
तयलंगी	387	भऊरा	397	संधूर	394
सरस	401	अहीरी गंधबी	399	अहीरी हिंदवी	402
अहीरी गूजरी	401	अहीरी गुआरेरी	405	बिसनुपद देवकी	403
कछेली	410	पटमंजरी	408	कामोदी	416
कालंका	412	कुंजल	417	भास्कर	417
चंद्र बिंब	421	सरसबान	420	कमल	326
कमल बियोगी	421	राग चंपक	433	मंगलन	432
कुसम	437	सयाम	435	जलधारा	453
बैराधर	449	सुरमानंद	471	गजधर	459
कमोद	498	रामा	481	सिंध्वी	532
मेघराग	514	जबलीधर	532	हिंढोल बिसाली	544
दादरा	610	तेताला आड़ा	610	जगला	615
दरबारी पुनयांकी	615	काफ़ी	616	तल फ़ाखता	618
भोपाली	616	चऊताला ध्रुपद	624	बिभास तिताला	632
खंभायच	641	ब्रिध खंभायच	645	रसालू	652
भीखक	655	भ्रिंगरा	658	कुसमी जीत	660

देवपलासी	667	ललित के	667	ललित फिरंगी	670
गुणवंती	683	उतोला झंझोटी	689	सुर बंगली	692
खसुर राग	700	बडहंस	736	शंकर विभास	750
चंद्र प्रकास	752	सिंध बरगी	757	मित्रा बरनी	758
संकर सुजाती	758	म्रिग लोचन	766	शंकर गंधरी	832
शंकर मयन धव्जी	839	हंस धव्जी	830	मतस धव्जी	839
मकर धव्जी	839	माल धव्जी	839	सपरन ाव्जी	839
सहड्ड धव्जी	839	लघ धव्जी	839	अनंद धव्जी	840
गज धव्जी	840	मेघ बरनी	840	मूजीत बरनी	840
सयाम बरनी	840	चंद्र प्रभा	840	समदर्सी	840
असट माली	841	महासिनाई	841	ब्रिसकेतु	841
अैरावती	841	ब्रितिधरी	842	सहड्डधरा	842
सुध लोइन	842	बैराट लोचन	842	चार लोचन	842
पुरंदरी	842	अंमाली	842	रोमावली	843
महाबली	843	सेस रसना	843	धर्म सुखी	843

श्री सरब लोह ग्रन्थ में प्रयुक्त राग प्रकार

राग भैरऊ दूजी तरह	19	रामकली दूजी तरह	20	गूजरी दूजी तरह	21
देवगंधरी दूजी तरह	22	प्रभाती दूजी तरह	26	धनासरी अंबिका	27
बिलावर दूजी तरह	28	बिलावल मंगल	28	तैलंग दूजी तरह	31
तेलंग काफ़ी	31	श्री राग दूजी तरह	32	कानड़ा दूजी तरह	40
कलियाण दूजी तरह	42	सोरठि दूजी तरह	51	जैजीवती दूजी तरह	73
तुखारी दूजी तरह	61	जैतसरी दक्खणी	73	जैतसरी दक्खाणी दूजी तरह	73
बैराड़ी पूरबी	79	बैराड़ी दूजी तरह	80	टोड़ी दूजी तरह	86
गोंढबिलावल दूजी तरह	96	मलार दूजी तरह	177	हिंडोल बसंत	251
मालकौंस दक्खणी	284	मालकौंस दूजी तरह	286	मालकौंस दादरा	300
दीपक करनाटी मकर	306	दीपक दूजी तरह	321	भैरवी दूजी तरह	366
गंधरी दूजी तरह	375	गोंढकरी दूजी तरह	377	कऊभाग जीत दक्खणी	384
खऊखट दूजी तरह	385	अबिबात तलंगी	387	भऊरा पसतऊ	392
अबिबात संधूर	395	कछेरी दूजी तरह	406	भास्कर हिंदवी	417
मंगल दूजी तरह	433	कामोदा	473	संधवी दूजी तरह	505
मेध्राग दूजी तरह	523	ज्बलीधर दूजी तरह	539	बिंसाली हिंडोल	546
हिंडोक धनासरी	584	हिंडोक दादरा	610	धुनासरी दादरा	610
कंनडी धुनाबली	610	आड़ा तेताला	612	यमन धुनाबली	614
जंगला यमन धुनाबली	615	ताल खखता दूजी तरह	618	भोपाली एकतालीसम	619

कलिसट खंभबक	641	राज कुसमी	663	भीम पलासी	663
चंद्र पलासी	664	गज पलासी	664	राज पलासी	666
धनासरी	691	बिराग भोपाली	692	पुरबी धूर बंगाली	692
वडहंस दक्खणी	692	वडहंस करखा	736	वडहंस दूजी तरह	736
प्रभाती संकर	751	चंद्र सेस	752	चंद्र भास	752
संकर हरिपदी	758	संकर महादीव	760	जलचर मुखी	760
पुरहुती	842	निरंजनी	842	परंजनी	843
म्रित अंजुली	843	अमोध रूपी	843	अनंत धबी	843

श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी ने अपने से पूर्व गुरू साहिबान की तरह गुरमति संगीत प्रबन्ध के अन्तर्गत रामकली, सोरठि, कल्याण, तिलंग, काफ़ी, बिलावल, देवगांधरी आदि रागों में वाणी का उच्चारण किया। आपने वाणी रचना के लिए वर्तमान समय के भारतीय संगीत की प्रचलित महत्वपूर्ण ख़यल–गायन–शैली का भी इस्तेमाल किया। ख़्याल–गायन–शैली के आविष्कार के बारे में विद्वान्ों में मनभेद पाए जाते है। कुछ विद्वान् जौनपुर के बादशाह सुलतान हुसेन शर्की को ख़्याल–शैली का आविष्कारक मानते हैं। अधिकांश इतिहासकारों के अनुसार इस शैली का आविष्कार अमीर खुसरो ने किया। पर इनकी तरफ़ से ख़्याल–शैली की ईजाद के बारे में कोई सबूत किसी ग्रंथ में उपलब्ध नहीं है। प्रो॰ तारा सिंह जी के अनुसार, गुरूग्रन्थ साहिब की सारी रचना में 'ख़याल' शब्द शैली के रूप में प्रयुक्त कहीं नहीं मिलता और ना ही इस काल के किसी गायक, भक्त, सन्त कवि या किसी सूफ़ी फ़कीर ने 'ख़याल' का प्रयोग अपनी रचना में किया हैं। इस लिए भरातीय संगीत में ख़याल–शैली की ईजाद श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी ने ही की। इस बात की पुष्टि के लिए गुरू गोबिन्द सिंह–रचित ख़याल 'मितर प्यारे नू' काफ़ी प्रसिद्ध है। ख़याल–गीत की रचना संक्षिप्त होती है। इसमें स्थायी और अन्तरा दो ही भाग होते हैं। श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी की सांगीतिक प्रतिभा और परम्परा के अनुसार गुरूजी ने अपने दरबार में बावन कवि रखे थे, जो गुरमति अनुसार कविता की रचना करते थे। इनके अलावा भाई मदू और सदू रबाबी जो कि दोनों भाई थे, 'आसा की वार' का कीतर्न करते थे।

श्री आनंदपुर साहिब, जो गुरमति संगीत के प्रचार–केंन्द्र के साथ सिक्ख–शक्ति का केन्द्र बना। उसमें चली आ रही सुबह–शाम गुरवाणी कीर्तन की रीति को जारी रखा गया। श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी ने युद्ध के समय भी कीर्तन की परम्परा के साथ–साथ वार–गायन की परम्परा को भी क़ायम रखा। श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी लाख तुरकानी फौज के साथ आनन्दपुर साहिब के क़िले में घिरे रहे, परन्तु वहाँ भी अमृत प्रातः समय 'आसा की वार' और शाम के समय कीर्तन दरबार में जाते रहे।[14] आपने गुरमति संगीत परम्परा में पूर्व प्रचालित रबाब, ताऊस, सारन्दा आदि साज़ों के साथ तानपूरे का भी प्रचलन किया।[15]

गुरमति संगीत में भक्तों का योगदान

भक्त जयदेवः बंगाल के प्रसिद्ध भक्त कवि और महान् संगीतकार जयदेव जी का जन्म 1201 ई॰ को बीरभूमि ज़िले के गाँव कांदली में पिता भोजदेव और माता बामदेवी की कोख से हुआ। आपके जन्म–स्थान और यादगारी के तोर पर मंदिर बनाया गया है और प्रत्येक वर्ष माघ की संक्रांति के दिन मेला लगता है। भक्त जयदेव की रचना 'गीत–गोविंद', जहाँ काव्यपक्ष से उक्तम है, वहाँ सांगीतिक पक्ष से भी उच्चतम है।

'गीत–गोविंद' में दर्ज भगवान् कृष्ण की उपमा के सम्बन्ध में उचारे, गाए गए गीत प्राचीन समय में प्रचलित प्रबन्ध–गायन–शैली का उक्तम नमूना है। भक्त जयदेव की स्तुति श्री गुरू अर्जुनदेव जी ने भी की है, जो 'गुरूग्रन्थ साहिब' में भी दर्ज है–'जयदेव तिआगउ अहंमेव'। भक्त जयदेव जी के शब्द राग मारू और राग गुजरी में 'श्री गुरूग्रन्थ साहिब' में क्रमवार पृष्ठ 1106 और 526 पर दर्ज है।

भक्त त्रिालोचन जी: वैष्णव–कुल के भक्त त्रिलोचन जी का जन्म 1325 ई॰ को हुआ। आप ज़िला शोलापुर के निवासी थे। 'श्री गुरूग्रन्थ साहिब' में दर्ज फ़रमान–'नामा माया मोहिआ कहै त्रिलोचन मीता' से स्पष्ट है कि भक्त त्रिलोचन जी भक्त कबीर के समकालीन थे। आपने अपनी वाणी के गायन के लिए श्री, गूजरी, धनासिरी रागों का प्रयोग किया, जो 'श्री गुरूग्रन्थ साहिब' के पृष्ठ 92, 525 और 695 पर क्रमवार अंकित है।

भक्त सधना जी: भक्त सधना जी जाति के कसाई थे पर प्रभु के प्रेम ने भक्त बना दिया। आप सिंध के इलाके सेहवान के निवासी थे। भक्त जी की एक रचना शब्द के रूप में 'न्रिप कंनिया के कारनै इकु भईआ भेखधरी' राग बिलावल में 'श्री गुरूग्रन्थ साहिब' के पृष्ठ 858 पर दर्ज है।

भक्त बेणी जी: 15–वीं सदी के भक्त बेणी जी पढ़े–लिखे दूरदर्शी विद्वान् थे। आपने अपने समय में प्रचलित मत–मतातरों का खंडन किया। बैणी जी के प्रभु–प्रेम और भक्ति से खुश होकर परमात्मा ने राजा का रूप धारण करके आपकी आर्थिक जरूरतें पूरी कीं, इस बारे में भाई गुरदास जी ने दसवीं वार में लिखा है। 'श्री गुरूग्रन्थ साहिब'में दर्ज कल्य भट्टृ जी का कथन आपकी शख़्सियत को पूरी तरह उजागर करता है:

भगत बेणि गुण खै सहजि आतम रंगु माणै।
जेग धिआनि गुर गिआनि, बना प्रभु अवरू ना जाणै।।[16]

भक्त बेणी जी की वाणी सिरी राग में और 'श्री गुरूग्रन्थ साहिब' के पृष्ठ 93 और रामकली राग में पृष्ठ 974 पर अंकित है।

भक्त कबीर जी: भक्त लहर के प्रमुख भक्त कवि कबीर जी का जन्म 15, सवंत् 1455 को हुआ। भक्त जी जुलाहे जाति के और बनारस के बाशिन्दे थे। काशी में भक्त कबीर जी को मानने वाली 'कबीर पंथ' नाम का एक सम्प्रदाय भी है और इसका ग्रन्थ 'कबीर बीजक' है। भक्त कबीर के नाम पर ओर भी वाणी मिलती है, पर उसमें विद्वानों के मतभेद पाए जाते है। 'श्री गुरूग्रन्थ साहिब' में दर्ज भक्त कबीर की वाणी प्रामाणिक मानी जाती है। 'श्री गुरूग्रन्थ साहिब' मे दर्ज भक्तों की वाणी में भक्त कबीर की सबसे ज़्यादा वाणी है। आपने वाणी की प्रस्तुति के लिए सिरी, गऊड़ी, गऊड़ी चेती, गऊड़ी बैरागणि, गऊड़ी पूरबी, गऊड़ी गुआरेरी, गऊड़ी भी सोरठि भी, आसा, गूजरी, सोरठि, धनासरी, तिलंग, सूही, सूही ललित, बिलावल, गौंढ, रामकली, मारू, केदार, भैरऊ, बसंत, बसंत हिंडोल, सारंग, प्रभाती, प्रभाती बिभास रागों को प्रयोग में लिया।

भक्त नामदेव जी: महाराष्ट्र के प्रसिद्ध भक्त कवि नामदेव जी का जन्म जिला सतारा के गाँव नरसीबांमनी में 1290 ई॰ को पिता दमसेती के घर माता गोनाबाई की कौख से हुआ। भक्त जी पहले भगवान् विष्णु के पुजारी थे फिर विशोभा खेचर और ग्यानदेव आदि की संगत में रहकर आपको आत्म–ज्ञान की प्राप्ति

हुई। आपकी रचना मराठी और संत दोनों भाषाओं में मिलती है। मराठी भाषा में आपके पद 'अभंग' नाम से प्रसिद्ध है और ग्रन्थ 'नामदेव गाथा' में संकलित है। इन पदों का महाराष्ट्र में आमतौर से गायन किया जाता है। 'श्री गुरूग्रन्थ साहिब' में भी भक्त नामदेव जी की वाणी आसा, गऊड़ी चेती, गूजरी, सोरठि, धनासरी, जैतसरी, तिलंग, बिलावल, गौंढ, रामकली, माली गऊडा, मारू, भैरऊ, बसंत, सारंग, मल्हार कान्हड़ा, प्रभाती रागों में अंकित है।

भक्ति रविदास जी: काशी के भक्त रविदास जी रामानन्द जी के शिष्य थे। आपका जन्म नीच कुल में होने के बावजूद आपको आत्म–ज्ञानी की पदवी प्राप्त थी। हिन्दी साहित्य में कुछ विद्वानों ने भक्त जी को 'रैदास' भी लिखा है। 'रैदास जी की वाणी' नामक पुस्तक में आपकी रचनाएँ उपलब्ध हैं। उस के अलावा 'श्री गुरूग्रन्थ साहिब' में आप की रचनाएँ शब्द के रूप में सिरी, गऊड़ी, गऊड़ी पुरबी, गऊड़ी, बैरागणि, आसा, गूजरी, सोरठि, ध्नासरी, जैतसरी, सूही, बिलावल, गौंढ, मारू, केदार, भैरऊ, बसंत, मल्हार रागों के अंतर्गत अंकित हैं।

भक्त पीपा जी:– भक्त पीपा जी का जन्म 1483 ई॰ में हुआ। आप गगरौन के सरदार थे। पीपा जी पहले दुर्गा माता के पुजारी थे, फिर बैरागी सम्प्रदाय के रामानंद जी के शिष्य बन गए। भक्त जी का एक शब्द धनासरी राग में 'कायऊ देव काईअऊ देवल काइअऊ जंगम जानी', 'श्री गुरूग्रन्थ साहिब' के पृष्ठ 695 पर दर्ज है।

भक्त सैण जी: भक्त सैण जी नाई जाति के थे। आपके जीवनकाल से संबंधित कोई हवाला नही मिलता। भक्त सैण जी प्रसिद्ध कवियों में से एक थे, जो 'श्री गुरूग्रन्थ साहिब' में दर्ज फ़रमान से स्पष्ट है:– नामदेव कबीर तिलोचन सध्ना सैनु तरै।

कहि रविदास सूनहु रे संतहु हरि जीऊ ते सभै सरै।। रविदास, 'आदि ग्रन्थ', पृष्ठ 1106

भक्त सैण जी का एक शब्द 'धूप दीप घृत साजि आरती' राग धनासरी में 'श्री गुरूग्रन्थ साहिब' में पृष्ठ 695 पर दर्ज है।

भक्त धन्ना जी: भक्त धन्ना जी का जन्म राजस्थान में टोंक के इलाके धुआन गाँव में हुआ। भक्त जी पहले मूर्ति पूजक थे, फिर निरगुणवादी होकर जगन्नाथ परमात्मा के उपासक बन गए। आप की वाणी दो रागों आसा और धनासरी के अंतर्गत 'श्री गुरूग्रन्थ साहिब' में उपलब्ध है। आपकी वाणी के अध्ययन से स्पष्ट है कि आपने आर्थिक जरूरतों का बयान किया और प्रभु की आरती की जगह 'आरता' उतारा।

भक्त फ़रीद जी: चिश्ती ख़ानदान के सूफ़ी संत शेख़ फ़रीद जी का जन्म गाँव कोठीवाल, जिला मुलतान में शेख़ जमालुद्दीन के घर बीबी मरियम की कोख से 1173 ई॰ को हुआ। आप ख़्वाजा कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी के मुरीद थे। फ़रीद जी ने अपने आत्मिक प्रभावों से अनेक लोगों को बंदगी के रास्ते पर लगाया। भक्त फ़रीद जी की वाणी राग आसा में 'श्री गुरूग्रन्थ साहिब' के पृष्ठ 488 और राग सूही में पृष्ठ 747 पर उपलब्ध है।

भक्त सूरदास जी: मदनमोहन ब्राह्माण बादशाह अकबर का अहलकार अवध के इलाक़े संदील का हाकिम था, जो बाद में सूरदास जी के नाम से प्रसिद्ध हुआ। भक्त सूरदास जी का जन्म 1586 ई॰ को हुआ। आप संस्कृत, हिन्दी, फ़ारसी के पूर्ण विद्वान् थे। 'श्री गुरूग्रन्थ साहिब' में राग सारंग में एक शब्द रचना 'हरि के संग बसे हरि लोक' पृष्ठ 1253 पर उपलब्ध है।

भक्त रामानन्द जी: रामानुजाचार्य के पैरोकार रामानन्द जी को भक्ति–लहर का प्रथम प्रचारक माना जाता है। भक्त जी का जन्म कान्यकुब्ज ब्राह्माण भुरिकरमा के घर माता सुशीला की कोख से संवत् 1423 में हुआ। भक्त जी पहले सर्गुणवादी वैष्णव थे, बाद में निर्गुणवादी हो गए थे। इसलिए सर्गुण और निर्गुण, दो भक्ति–भेद होने के कारण रामानन्द जी के शिष्य दो शाखाओं में बाँटे गए। सर्गुणवादी भक्तों को 'वैरागी' और निर्गुणवादी भक्तों को 'संत' नाम से पुकारा जाता था। वैरागी शाखा में भगवान् राम की सर्गुण भक्ति की जाती थी। रामानन्द जी के शिष्य वैरागी या सर्गुण भक्ति अनुसार अनंतानंद, सुखानंद, योगानंद आदि के अलावा तुलसीदास जी का नाम भी प्रसिद्ध है, जिनका काव्य और सांगीतिक महानता विशेष है। 'संत' भक्तजनों में निगुर्ण भक्ति की जाती है, जिस का प्रचार कबीर व रविदास आदि ने किया। भक्त रामानन्द जी की एक रचना शब्द के रूप में राग बसंत में 'कत जाईऐ रे घर लागो रंग', 'श्री गुरूग्रन्थ साहिब' के पृष्ठ 1195 पर दर्ज है।

भक्त परमानन्द जी: ज़िला शोलापुर बारसी के निवासी भक्त परमानन्द जी अपने सद्गुणों के कारण प्रसिद्ध महा त्यागी और भक्त थे। आपनी वाणी के पदों में आप अपनी छाप के तौर पर 'सारंग' शब्द का इस्तेमाल करते थे। आपके जीवनकाल से सम्बन्धित कोई विशेष हवाला उपलब्ध नहीं होता। 'श्री गुरूग्रन्थ साहिब' में राग सारंग में एक शब्द 'तै नर किआ पुरानु सुनि कीना' पृष्ठ 1253 पर अंकित है।

सक्ता और बलवंड: गुरू घर के रबाबी भाई सक्ता और बलवंड 'गुरमति संगीत' के प्रसिद्ध कीर्तनकार हुए हैं। गुरू घर में आपका बहुत सत्कार था। आसा की वार की चौकी का प्रारम्भ सक्ता और बलवंड ने खूब निभाया। यह आपके सत्कार और विशेष स्थान का ही प्रतीक है कि इनके द्वारा रची गई रामकली की वार 'श्री गुरूग्रन्थ साहिब' में दर्ज है। इस वार का शीर्षक 'रामकली की वार राइ वलवंढि तथा सतै ढूमि आखी' जो 957 पृष्ठ पर अंकित है।

भट्टड्ड: 'श्री गुरूग्रन्थ साहिब' में भट्टड्डों के सवैये दर्ज हैं, जिनमें पाँच गुरूओं की महिमा का वर्णन किया गया है। राज–दरबारों में राजा और योद्धाओं की काव्य–रूप पुस्तक पढ़ने और गायन करने वाले को भट्टड्ड कहा जाता था। गुरू घर में इन भट्टड्डों ने सवैये रूप में गुरूओं की महिमा का जो वर्णन किया, वह 'श्री गुरूग्रन्थ साहिब' में पृष्ठ 1385 पर भट्टड्डों के सवैये शीर्षक से दर्ज है। इन भट्टड्डों के नाम इस प्रकार हैः कलसहार, जालप, कीरत, भिखा, सल्ल, भल्ल, नल्ल, मथुरा, बल्ल, गयंद, हरिबंस, दास, कल्ल, जल्ल, जल्लन, टल्ल, सेवक, सदरंग, परमानन्द, पारथ, नल्ल, ठाकुर, गंगा।

उक्त विचार से 'श्री गुरूग्रन्थ साहिब' के सदंर्भ में समूह गुरू साहिबान और संत भक्तों का भरपूर योगदान भली भाँति स्पष्ट है। गुरू साहिबान और संत–भगत से सम्बन्धित और सुन्दरतर खोज हमें ओर

अधिक सार्थक निष्कर्ष की प्राप्ति करवाने में सार्थक होगी। इसी लिए अभी 'गुरमति संगीत' के विकास से सम्बन्धित अधिक गहरे और वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता है।

सहायक ग्रन्थ

1 बिलावल महला 4, 'आदि ग्रंन्थ', पृष्ठ 910
2 'भाई गुरदास की वारां' वार 38–वीं, पऊड़ी 9
3 'आदि ग्रन्थ', पृष्ठ 911
4 'भाई गुरदास की वारां' वार पहली, पऊड़ी सोलहवीं
5 वही, वार पहली, पऊड़ी 46–बीं
6 सवैये महले चऊथे के, 'आदि ग्रन्थ', पृष्ठ 1400
7 प्रो॰ तारा सिंह, भूमिका श्री गुरू अमरदास, राग रत्नावली
8 सलोक महला 4, 'आदि ग्रन्थ', पृष्ठ 9824
9 डी.एस. नरूला, 'गुरू नानक संगीतज्ञ' पृष्ठ 148
10 'गुरमति संगीत विच वरतींदे साज़', प्यारा सिंह स्मृति ग्रन्थ, अदूति गुरमति संगीत सम्मेलन, 1991
11 भाई जोध सिंह, श्री करतारपुर बीड़ के दर्शन, पृष्ठ 72
12 'स्मृति ग्रन्थ, अदुति गुरमति संगीत सम्मेलन' 1991 पृष्ठ 89
13 प्रो॰ तारा सिंह, 'वादन कला', पृष्ठ 288–89
14 ए.एस. गोयल, 'सिक्ख धर्म और संगीत', पृष्ठ 76
15 'स्मृति ग्रन्थ, अदूति गुरमति संगीत सम्मेलन, 1991, पृष्ठ 42
16 'आदि ग्रन्थ', पृष्ठ 1390